• व्रत...

देवउठनी एकादशी

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी पर देवउठनी एकादशी मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की योगनिद्रा के बाद जागते हैं। इसी दिन चातुर्मास का समापन होता है। चातुर्मास के खत्म होने के बाद विवाह और अन्य सभी मांगलिक कार्य शुरू होते हैं।

देवउठनी एकादशी पर पूरे दिन रवि योग का संयोग : हिंदू ज्योतिष शास्त्र में रवि योग को एक अत्यंत शुभ और प्रभावशाली योग माना जाता है। यह योग सूर्य देव के प्रभाव और उनकी विशेष कृपा से बनता है। मान्यता है कि इस योग में किए गए कार्य, जप-तप और दान का कई गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है। इस बार देवउठनी एकादशी पर रवि योग पूरे दिन रहने वाला है। रवि योग के कारण इस व्रत का महत्व बढ़ रहा है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस अवसर पर भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति को शुभ परिणाम मिलते हैं और जीवन में सुख-शांति बनी रही है। इस व्रत का पारण अगले दिन यानी द्वादशी तिथि पर किया जाता है। ऐसे में आइए इस आर्टिकल में आपको बताते हैं कि देवउठनी एकादशी की सही डेट, शुभ मुहूर्त और पारण समय के बारे में।

देवउठनी एकादशी 2026 डेट और शुभ मुहूर्त

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि की शुरुआत : 20 नवंबर को सुबह 07 बजकर 15 मिनट पर

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि का समापन : 21 नवंबर को सुबह 06 बजकर 31 मिनट पर, वैदिक पंचांग के अनुसार, देवउठनी एकादशी का व्रत 20 नवंबर को किया जाएगा।

देवउठनी एकादशी व्रत 2026 पारण टाइम

धार्मिक मान्यता के अनुसार, एकादशी व्रत का पारण शुभ मुहूर्त में करने से पूर्ण फल प्राप्त होता है और श्री हरि की कृपा प्राप्त होती है। 21 नवंबर को एकादशी व्रत पारण करने का समय दोपहर 01 बजकर 10 मिनट से 03 बजकर 18 मिनट तक है। इस दौरान किसी भी समय व्रत खोल सकते हैं।

ज्योतिष गणना के अनुसार, 21, 24, 25 और 26 नवंबर को विवाह का शुभ संयोग बन रहा है। ऐसा माना जाता है कि शुभ मुहूर्त में विवाह करने से वैवाहिक जीवन में सुख-शांति बनी रहती है।

हिंदू पंचांग के अनुसार, चातुर्मास की शुरुआत आषाढ़ महीने की देवशयनी एकादशी से होता है। इस दिन भगवान विष्णु चार महीने के लिए क्षीरसागर में योग निद्रा में चले जाते हैं। वहीं, इसका समापन कार्तिक शुक्ल पक्ष की देवउठनी एकादशी पर होता है।

• पूजा-पाठ...

नहाय-खाय, खरना से लेकर संध्या और उषा अर्घ्य तक

महापर्व छठ का व्रत सबसे कठिन व्रतों में से एक माना जाता है। इसमें महिलाएं पूरे 36 घंटे तक का निर्जला उपवास रखती हैं। छठ पूजा को सूर्य षष्ठी, छठ, छठी, छठ पर्व, डाला पूजा और डाला छठ के नाम से भी जाना जाता है। छठ पूजा के दिन छठी मईया और सूर्य देव की पूजा की जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, छठ का व्रत करने से संतान दीर्घायु होते हैं और उसका जीवन सुखमय रहता है। इसके साथ ही परिवार में सुख-समृद्धि और खुशहाली बनी रहती है। छठ का पर्व पूरे चार दिनों तक चलता है, जिसका आरंभ नहाय-खाय के साथ होता है। तो आइए जानते हैं छठ पूजा का पूरा कैलेंडर और प्रमुख तारीखें।

छठ पूजा 2026 कैलेंडर

नहाय खाय- 13 नवंबर 2026

खरना- 14 नवंबर 2026

छठ पूजा (संध्या अर्घ्य)- 15 नवंबर 2026

छठ पूजा उषा अर्घ्य (पारण का दिन)- 16 नवंबर 2026

छठ पूजा पहला दिन- नहाय खाय

4 दिवसीय महापर्व छठा का आरंभ 13 नवंबर 2026 से होगा। इस दिन व्रत महिलाएं सुबह उठकर स्नान कर के साफ वस्त्र पहनकर सूर्य देव को जल अर्पित करती हैं। इसके बाद सात्विक भोजन का सेवन करती हैं। इस दिन का भोजन बिना लहसुन-प्याज के बनाया जाता है। नहाय खाय के दिन कद्दू की सब्जी, लौकी चने की दाल और भात यानी चावल खाया जाता है।

छठ पूजा का दूसरा दिन- खरना

छठ पूजा के दूसरे दिन खरना होता है। इस दिन व्रती महिलाएं पूरा दिन व्रत करती हैं और फिर रात में पूजा के बाद खीर ग्रहण करती हैं। खरना के बाद से ही व्रती महिलाओं का 36 घंटे का निर्जला उपवास आरंभ हो जाता है। बता दें कि खरना के दिन गुड़, चावल और दूध की खीर बनाई जाती है। खरना के दिन नमक का सेवन नहीं किया जाता है। इस साल खरना 14 नवंबर 2026 को रहेगा।

छठ पूजा का तीसरा दिन- संध्या अर्घ्य

छठ पूजा के तीसरे दिन पहला अर्घ्य दिया जाता है, जिसे संध्या अर्घ्य कहा जाता है। इस दिन व्रती महिलाएं जल में खड़ी होकर डूबते सूर्य को अर्घ्य देती हैं। इस साल संध्या अर्घ्य 15 नवंबर 2026 को दिया जाएगा।





छठ में किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती। यह पर्व प्रत्यक्ष देवता सूर्य और जल की महत्ता को रेखांकित करता है। पूजा में उपयोग होने वाले बांस के सूप, मिट्टी के दीये और स्थानीय फल पर्यावरण को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाते।

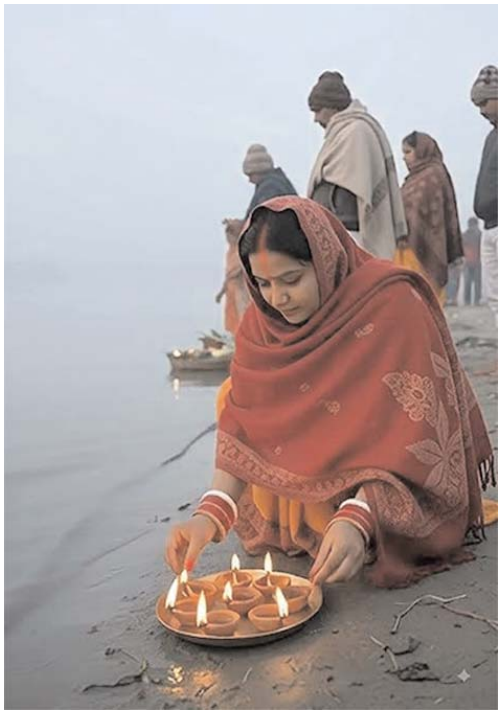
समाज में केवल चढ़ते सूरज को सलाम किया जाता है, परंतु छठ पूजा सबसे पहले ढलते हुए सूर्य को नमन करना सिखाती है। यह संदेश देता है कि जीवन में शुरुआत के साथ-साथ समापन का भी उतना ही सम्मान होना चाहिए...

छठ पूजा का चौथा और आखिरी दिन- उषा अर्घ्य

छठ पूजा के चौथे और आखिरी दिन उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता, जिसे उषा अर्घ्य कहा जाता है। इस दिन व्रती महिलाओं भोर के समय जल में खड़े होकर उगते सूर्य देव को अर्घ्य देती हैं। अर्घ्य के बाद इसी दिन व्रती महिलाएं छठ व्रत का पारण करती हैं। उषा अर्घ्य 16 नवंबर 2026 को दिया जाएगा।

क्यों खास है छठ महापर्व ?

प्रकृति की प्रत्यक्ष उपासना : छठ में किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती। यह पर्व प्रत्यक्ष देवता सूर्य और जल की महत्ता को रेखांकित करता है। पूजा में उपयोग होने वाले बांस के सूप, मिट्टी के दीये और स्थानीय फल पर्यावरण को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाते। समाज में केवल चढ़ते सूरज को सलाम किया जाता है, परंतु छठ पूजा सबसे पहले ढलते हुए सूर्य को नमन करना सिखाती है। यह संदेश देता है कि जीवन में शुरुआत के साथ-साथ समापन का भी उतना ही सम्मान होना चाहिए।



छठ पूजा में छोटी-सी लापरवाही भी व्रत की पवित्रता को प्रभावित कर सकती है। इसलिए इस महापर्व के दौरान कुछ खास नियमों का पालन करना जरूरी है

- अगर आप छठ का व्रत करती हैं, तो आपके लिए इस व्रत का संकल्प लेना जरूरी होता है। अगर आप इसका संकल्प लिए बिना ही व्रत करती हैं या संकल्प पूरा नहीं करती हैं, तो व्रत और पूजा का पूर्ण फल नहीं मिलता है। आमतौर पर परिवार का कोई एक ही सदस्य संकल्प लेकर व्रत करता है, जबकि बाकी सदस्य इसमें सहयोग करते हैं। घर के सदस्यों को भी छठ पूजा के नियमों का पालन करना चाहिए।
- अगर आप छठ पूजा के दौरान घर की ठीक से साफ-सफाई नहीं रखते हैं, तो पूजा का फल नहीं मिलता है। यही नहीं इस दौरान आप जिस घाट में पूजा करते हैं, वहां भी सफाई बनाए रखें। इसके साथ ही व्रती महिलाओं को साफ वस्त्र धारण करने चाहिए और शारीरिक सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए।
- आप जो भी प्रसाद छठ पूजा में चढ़ाने के लिए बना रहे हैं उसके लिए ध्यान रखें कि आप उसे भूलकर भी न चखें। यही नहीं इस प्रसाद को भोग लगाए बिना बच्चों को भी न खिलाएं। प्रसाद बनाने से पहले उस जगह को अच्छी तरह से साफ करें और स्वयं भी स्नान आदि से निवृत्त होकर प्रसाद बनाएं। इसके अलावा आपको कभी भी भोग का अपमान भी नहीं करना चाहिए।
- यदि छठ पूजा वाले घर में कोई भी व्यक्ति तामसिक भोजन करता है या किसी भी तामसिक प्रवृत्ति का पालन करता है, तो व्रत करने वाले को भी इसका फल नहीं मिलता है। व्रत की गरिमा गए रखने के लिए इन चीजों से दूरी बनाए रखना जरूरी होता है।
- व्रत के समय आपको ध्यान रखना है कि छठ पूजा की सामग्री पूर्ण होनी चाहिए। यदि किसी सामग्री की कमी होती है, तो पूजा पूर्ण नहीं हो पाती है और व्रत का फल भी नहीं मिलता है।
- छठ पूजा हमेशा संतान की दीर्घायु की कामना में की जाती है और यदि आप इस दौरान घर में लड़ाई-झगड़े का माहौल रखते हैं, तो यह शुभ नहीं माना जाता है। इस दौरान आप शांति बनाए रखें। यही नहीं व्रती महिला की सेहत का ध्यान रखते हुए उनका पूरा सहयोग देना चाहिए।

■ पं. नित्यनंद

• वास्तु...

पैसों की कमी



अगर घर या दुकान की दीवारों पर दरारें आ गई हैं या पेंट की पपड़ी उतरने लगी है, तो उन्हें नजरअंदाज ना करें। वास्तु मान्यताओं के अनुसार, दीवारों की खराब स्थिति को शुभ नहीं माना जाता है। इसलिए समय रहते दीवारों की मरम्मत कराएं और जरूरत के अनुसार पेंट करवाएं। इससे घर और दुकान साफ-सुथरे दिखाई देंगे। अगर दीवारों में सीलन या गहरी दरारें हैं, तो उनकी वजह पता करके उचित मरम्मत कराना भी जरूरी है। घर या दुकान में पौधे लगाते समय उनकी देखभाल करना भी जरूरी है। वास्तु शास्त्र में हरे-भरे और स्वस्थ पौधों को शुभ माना जाता है, जबकि सूखी पत्तियों और मुरझाए पौधों को अच्छा संकेत नहीं माना जाता है। इसलिए पौधों की नियमित जांच करें और सूखी पत्तियों को काटकर हटा दें। उन्हें जरूरत के अनुसार पानी दें और पर्याप्त रोशनी वाली जगह पर रखें। अगर कोई पौधा पूरी तरह सूख गया है, तो उसकी जगह नया पौधा लगा सकते हैं। घर या दुकान के आसपास चमगादड़ों का डेरा होना अशुभ माना जाता है। मान्यता है कि इससे आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां बढ़ सकती हैं। अगर छत, बालकनी या किसी खाली हिस्से में चमगादड़ नियमित रूप से जमा हो रहे हैं, उन्हें खुद पकड़ने या नुकसान पहुंचाने की कोशिश ना करें।

• हनुमान चालीसा...



धार्मिक मान्यता के अनुसार, सच्चे मन से हनुमान चालीसा का पाठ करने से हर प्रकार का अज्ञात भय, असुरक्षा और मृत्यु का डर दूर होता है। साथ ही हनुमान जी की कृपा से जीवन में सुख-शांति बनी रहती है।मंगलवार या शनिवार के दिन हनुमान चालीसा की इस चौपाई का पाठ करने से व्यक्ति के मन का हर प्रकार का डर दूर होता है और सुख-समृद्धि व आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। इसके अलावा, किसी नए काम की शुरुआत करने या परीक्षा से पहले इस चौपाई का पाठ करने से कार्यों में निश्चित सफलता प्राप्त होती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित